देखो... व्यर्थ हमें कहाँ ले जा रहा...!

हम कितने भाग्यशाली हैं जो संसार के 'असार कुचक्र' से छूट गये। हमने जन्म-जन्म इस कुचक्र से छूटने के न जाने कितने प्रयत्न किये, कितनी ही कोशिश की, किन्तु जितना ही उससे छूटने की कोशिश की उतना ही उस दलदल में और ही फंसते गये। न जाने हमने कितने पंडितों-विद्वानों के आगे चक्कर काटे होंगे, पर हमें असफलता ही हाथ लगी। इसका मतलब ये था कि जिस पर हमारी आस्था थी वे स्वयं ही इससे मुक्त नहीं थे। तो भला वे हमें कैसे मुक्त कर पाते! आज की एडवांस जनरेशन में इससे छूटने के लिए कई पॉज़ीटिव थिंकिंग का सहारा ले रहे हैं तो कई योगासन का। पर ये सब करते हुए भी पूर्णतः सफल नहीं हो पा रहे। हमने हाल ही में देखा कि एक मशहूर एक्टर जो रोज़ योगासन करता था, जिम में जाता था, शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट भी था, फिर भी हार्ट अटैक में अपनी जान गंवा दी। प्रयास तो करते हैं सभी अपने-अपने लेवल पर, पर फिर भी जीवन में कुछ न कुछ त्रुटियां रह ही जाती हैं। परिणामस्वरूप वे चाहते हुए भी उससे निजात नहीं पा सकते।

ऐसे वक्त में हम भाग्यशाली हैं कि हमें परमात्मा के द्वारा सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ और हम उसी राह को चुनकर आगे बढ़ रहे हैं। उस राह को हमने ही चुना क्योंकि हमें पता है कि इससे ही हमारा जीवन सफल होगा। होगा भी क्यों ना! ये बात दूसरों के लिए साधारण हो सकती है किंतु ऐसे सांसारिक कुचक्र के मध्य में हमने उसको जाना भी और पहचाना भी। अब परमात्मा का कहना है कि बच्चे अब छोड़ो सब व्यर्थ की बातें, और छोड़ो दुर्गुण देखने की आदत को, इसमें ही आपका कल्याण है। इसके लिए कल्याणकारी प्रभु ने हमें अनेक विधियां, युक्तियां अथवा उपाय बताये हैं जिनसे आत्मा में घुसे हुए व्यर्थ व बुरे संस्कार बाहर निकल जाते हैं और उससे पीछा छूट जाता है। सब बातों का तो यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं, परंतु एक ऐसी बात को हम यहाँ लिपिबद्ध करना चाहेंगे जो कि किसी अंश में हमारी दृष्टि-वृत्ति को विकृत होने से बचा सकती है।

ब्र.कु. गंगाधर

वो ये है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निंदा सुनकर, चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाहें सुनकर उसे तुरंत मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, 'अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा ही नहीं था।' हम उस बात की जांच नहीं करते बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वास पात्र है, हमारे निकटतम है, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरी घोंपते हैं। चाहे वो व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने लगते हैं कि 'अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति को फलाने से लगाव-झुकाव है! वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा करता है। और वो बोलने में बड़ा चालाक है। बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे से उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पत्थर बांध कर पानी में उतरेगा तो डूबेगा ही। उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।' ऐसी मानसिकता वालों का हाल भला क्या होगा!

जब हमारी ऐसी दृष्टि-वृत्ति हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वह स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है। गोया अपने ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को ज़िंदा जलाने के लिए अपनी चिता की लकड़ियां स्वयं चुनकर लाता है और उसकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथों से जगाता है। उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। शमशान पर जलाने की रस्म करने वाले जो पंडित होते हैं, उसकी भी उसे आवश्यकता नहीं। वो बिना मंत्र और रस्म के मर जाता है। किसी को उसका जनाज़ा उठाने की भी ज़रूरत नहीं। क्योंकि वह तो अपने आप ही चिता पर लेट जाता है। हाय! हाय! हम अपने जीवन से यह क्या करते हैं! जैसे कोई चंदन को जलाकर कोयला बना ले, वैसे ही हम अपने जीवन को भस्म कर लेते हैं। अब छोड़ो दुश्मनी को, उसके लिए छोड़ो नफरत को, नफरत को छोड़ने के लिए छोड़ो दूसरों की व्यर्थ बातों को सुनने और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत को। अगर यह एक बात भी हम पक्की कर लें तो भी हम उस रास्ते पर चल पड़ेंगे और खुशी, आनंद तथा मित्र भाव के झूले में झूलते रहेंगे। दृष्टि-वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों का बोझ बढ़ता जायेगा और पाप का घड़ा भरता जायेगा तथा जीवन दलदल में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंस हो जायेगी और जिसकी स्मृति-भ्रंस हो जाये तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है। तो हे मानव! अपने जीवन को एक बार बैठकर देखो, कहीं हमारा जीवन भी ऐसी आदतों के वश तो नहीं! हम अपने पैर पर खुद ही तो कुल्हाड़ा नहीं मार रहे! सोचो, चिंतन करो और ऐसी आदतों की चिता को तिलांजलि दे दो।

कौन कर रहा... हमारी परवरिश

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहो। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशनसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। खुशी गंवाओं नहीं, बातें तो होगी लेकिन बातें खुशी न ले जाएं, खुशी हमारी चीज़ है। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करेंगे। सदा इसी खुशी में उड़ते रहो। चेक करो शुरु से लेकर बाबा ने हमें कितने खज़ाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। कितना भी बिजी रहो लेकिन हमारी खुशी हमारे साथ रहे। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हमारा ड्रामा में भाग्य था जो बाबा के पास पहुंच गये। बाबा के घर में रहते हैं, खाते हैं यह कभी भूल नहीं सकता। अपनी चेकिंग करो कि दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। बाबा कहने से कितनी खुशी होती है। ऋषि-मुनि भी चाहते हैं भगवान हमें दिखाई दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया। जितना बाबा में मेरापन लायेंगे उतना खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा में खो जाओ। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी दी है हमारी आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना दूँगा! संगम पर साधारण पार्ट है लेकिन खुशी कितनी है और चाहिए ही क्या। वह हमारे लिए क्या-क्या कर रहा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है।

हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बीतते हैं। कभी ऐसा समझा था कि हम भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे! यह भाग्य कम थोड़े ही है। जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं उनकी निशानी सदा खुशनसीब की होगी। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। बाकी आपस में जो थोड़ी बहुत खिटपिट होती है, यह भी पेपर समझ पास होना है। हमारे जैसा खुश कोई और हो ही नहीं सकता। हमारे पर बाबा की नज़र पड़ गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ल न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ! बाबा मेरे साथ है बस यह स्मृति में रखो।

हमारे मन में चार गुण सदा होने चाहिए

राजयोगिनी दादी जानकी जी

धीरज, मन को धीरज दो। जल्दी अधैर्य न हो जाओ, अधैर्यता व्यर्थ चिंतन में ले जाती है, दुःखी बनाती है।

सहनशीलता, इसकी गहराई में जायेंगे तो सहन करने की शक्ति आती है। मुझे सहन करना पड़ता है, माना दुःख हुआ। शक्ल में थोड़ा भारीपन आयेगा, कभी आँखें गीली भी हो जायेंगी तो वो सहनशीलता नहीं है।

सबके साथ हमारा मित्रता भाव हो। मेरा कोई शत्रु नहीं है। निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। जो महिमा करे उसको मित्र मानो, जिसने कुछ निंदा की, गलत बोला, उसको शत्रु मानो, यह लक्षण ज्ञानी तू आत्मा के नहीं है। महिमा करने वाले तो मुझे खुश भी कर सकते हैं, आज महिमा करेंगे कल कुछ भी कर सकते हैं, इसलिए वो मेरे जीवन का आधार न हो। महिमा के आधार से मैं सेवा में रहूँ, उनसे मेरा अच्छा सम्बन्ध रहे... नहीं। रूहानियत है, ईश्वरीय स्नेह है, तो वह बात पूरी हो जायेगी। सहनशीलता सुखी रखेगी इसलिए हमारा हरेक के साथ मित्रता भाव कभी न छूटे, कुछ भी हो, मित्रता भाव में सब कुछ समा लेते हैं। बाबा ने जैसे हरेक को अपना मित्र माना। बात आती हैं चली जाती हैं, बातों के कारण हमारे आपसी सम्बन्ध ठीक न रहें, यह मेरे लिए शान नहीं।

गम्भीरता का गुण, यह गुण हमें ज्ञानी तू आत्मा बना देता है। जैसे बाबा मुस्कुराता कैसे है, बाबा की मुस्कुराहट में साधारणता तो नहीं है ना! शब्द थोड़े, रूप बड़ा स्नेह और शक्ति वाला हो, साधारण न हो।

दूसरा रूहानियत में रमणीकता हो। कोई सीन ऐसी आ जाये तो सीरियस न बन जायें। सीन देखके सीरियस हो जायेंगे तो हमारे मन का इफेक्ट तन पर भी आयेगा, वायुमण्डल में भी आयेगा। वायुमण्डल को सदा शांत, सच्चाई, प्रेम वाला रखना, उसमें दुःख की लेन-देन का बिजनेस बंद हो जाये। अगर थकावट वाला या सीरियस रूप है तो दुःख की लेन-देन का वायुमण्डल हो जाता है। हमें वो नहीं करना है।

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन... ज्ञान और योग

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्यूरेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सब्जेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा ना कि हम सो देवता है, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

एक बाप पर पूरा फेथ हो, आप उनसे फेथफुल अर्थात् ईमानदार रहो। जो ईमानदार है नैचुरल उनका रिगार्ड होगा। डिसरिगार्ड तभी होता जब फेथफुल नहीं। जो बाबा ने मुझे आज्ञाएं दी हैं उनको फुल पालन करना है। ऐसे नहीं दस में आठ पालन करूं, दो नहीं। बाबा की आज्ञाओं को सेन्ट परसेन्ट दिल में नोट करो फिर कोई भी सवाल नहीं रहेगा। सदा ओके बन जायेंगे। अगर मेरी स्थिति महान नहीं तो मैंने बाबा का बनकर क्या पाया!

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्यूरेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सब्जेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा ना कि हम सो देवता है, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो कहे तुम्हें आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करना है। परन्तु बाबा ब्रह्मचर्य में रहने की सख्त श्रीमत देता, इसमें ज़रा भी छूट नहीं। जिस बात के लिए दुनिया एक तरफ, उसी बाप को बाबा बिल्कुल स्ट्रॉन्ग करता। इस बात में रिंचक भी रहमदिल नहीं, इसमें काल होकर रहो। संस्कारों पर धर्मराज होकर रहो। जितना अपने संस्कारों पर धर्मराज बनेंगे उतना धर्म के ऊपर राज्य करेंगे। संस्कारों में ज़रा भी निर्बलता आयेगी तो हीन हो जायेंगे। लौकिक-अलौकिक कार्य में मस्त रहो। मस्तराम बन जाओ तो रावण आपेही पीठ कर लेगा। अगर सोचेंगे क्या करूँ, संस्कार हैं, तो वह कमज़ोर बना देंगे। सोचना भी कमज़ोरी है। आप डोन्टकेयर हो जाओ। आयेंगे चले जायेंगे, हमें बलवान से बलवान बाबा मिला। उसने हमें सब बल दे दिये इसलिए निर्बलता की बातें सोचो ही नहीं। आप समझो हम धर्मराज के समान हैं। हम माया को मार भगाने वाले हैं।

हमें एक ही डर है सतगुरु की श्रीमत के खिलाफ कोई मनमत न हो। जहाँ मनमत आई वहाँ अवज्ञा हुई, श्रीमत को पालन करने के लिए सतगुरु को सदा सामने रखो। श्रीमत मिली है बच्चे अमृतवेले उठना है, अन्न की परहेज रखनी है, संगदोष में नहीं आना है। रोज़ पढ़ाई पढ़नी है, यह सब सतगुरु ने श्रीमत दी। एक कहावत है जिनके सिर पर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावे। तो मुझे न कोई चिंता है, न दुःख।